पाठ-4

अपराजिता

आइए सीखें : ● दृढ़ इच्छा-शक्ति, धैर्य, साहस और निरन्तर साधना जैसे गुणों का विकास ● 'ऑ' की ध्वनि का ज्ञान ● मुहावरों का ज्ञान, अर्थ तथा वाक्य प्रयोग ● रचना के आधार पर वाक्य भेद ● अपठित गद्यांशों का अभ्यास ● विराम चिह्नों का प्रयोग।

*(**पाठ-परिचय :** यह एक ऐसी विकलांग महिला की मार्मिक कथा है जिसने अद्भुत धैर्य, दृढ़ इच्छा-शक्ति और अनवरत साधना से अपने जीवन को सक्रिय और सफल बनाया। विषम परिस्थितियों में वह साहसपूर्वक आगे बढ़ती रही, विजय प्राप्त करती रही तथा अपराजित (जो कभी न हारी हो) बनी रही।)*

कभी-कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है,जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अन्तर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दण्डित कर दिया हो किन्तु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर, हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है, जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने ऐसी अभिशप्त काया देखी, जिसे विधाता ने कठोरतम दण्ड दिया है, किन्तु वह उसे नतमस्तक, आनन्दी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उस कोठी का अहाता एकदम हमारे बँगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा, तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक ह्वील चेयर निकालकर सामने रख दी और भीतर चली गई। दूसरे ही क्षण, धीरे-धीरे, बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर बैसाखियों से ही चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह विचित्र आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती-ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

शिक्षण-संकेत : ■ बच्चों को हाव-भाव के साथ संस्मरण सुनाएँ तथा उनसे भी सुनें ■ बच्चों का ध्यान विकलांग व्यक्तियों की ओर आकर्षित करें तथा संवेदनशीलता का भाव जाग्रत करें ■ पाठ में आए कठिन शब्दों तथा प्रश्नोत्तर को जानने में बच्चों की सहभागिता को सुनिश्चित करें।

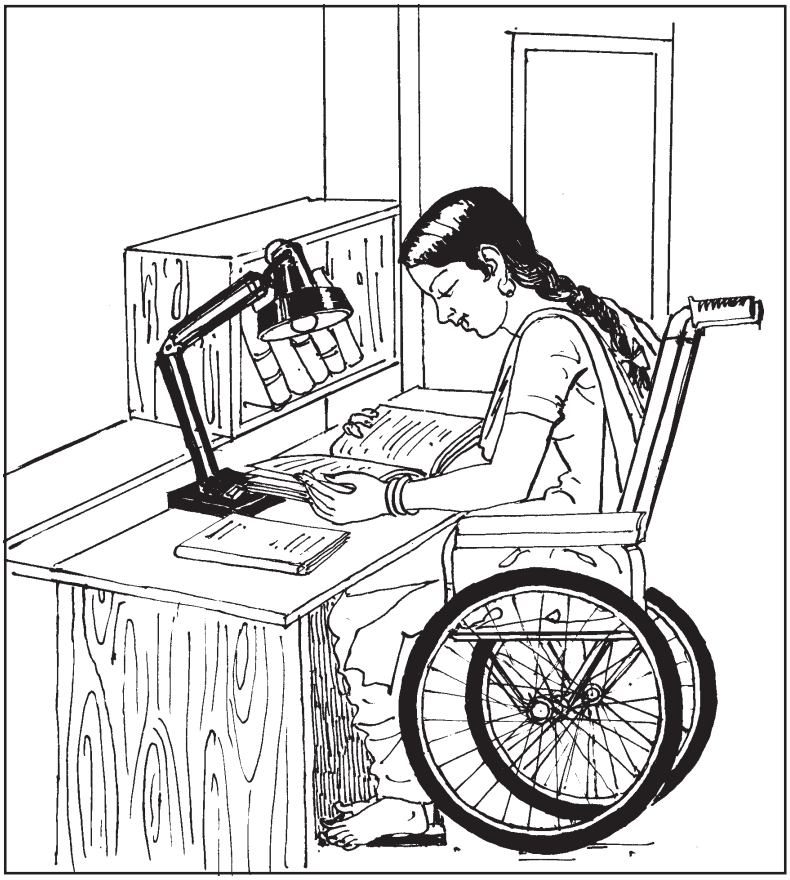

धीरे-धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बित्ते-भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी। मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सुसज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहिन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिए के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए पर बायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ-साथ मानसिक सन्तुलन भी खो बैठा। केवल हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चन्द्रा, जिसका निचला धड़ है, निष्प्राण मांसपिण्ड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त, आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिपल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

'मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर मेरे विषय, माइक्रोबायोलाजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?'

''मैडम, आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है?''

यहाँ कभी सामान्य-सी हड्डी टूटने पर या पैर में मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कण्ठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है। और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी-बोटी फड़क रही है। आजकल वह आई. आई. टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गरदन के नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव

कर दिया हो, उसने किस अद्‌भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा। अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

'मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसीलिए एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।''

उसने मुझे तस्वीरें दिखाईं। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर से उतार सकती थी। किंतु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदीर्घ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में, ''हमने आज तक दो व्यक्तियों द्‌वारा सम्मिलित रूप में नोबेल पुरस्कार पाते अपने ही विषय में सुना था, किंतु आज हम शायद पहली बार इस पी-एच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए।'' डॉ. चंद्रा और उनकी अद्‌भुत साहसी जननी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ-साथ कैसी कठिन साधना की। और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में। अपंग स्त्री-पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

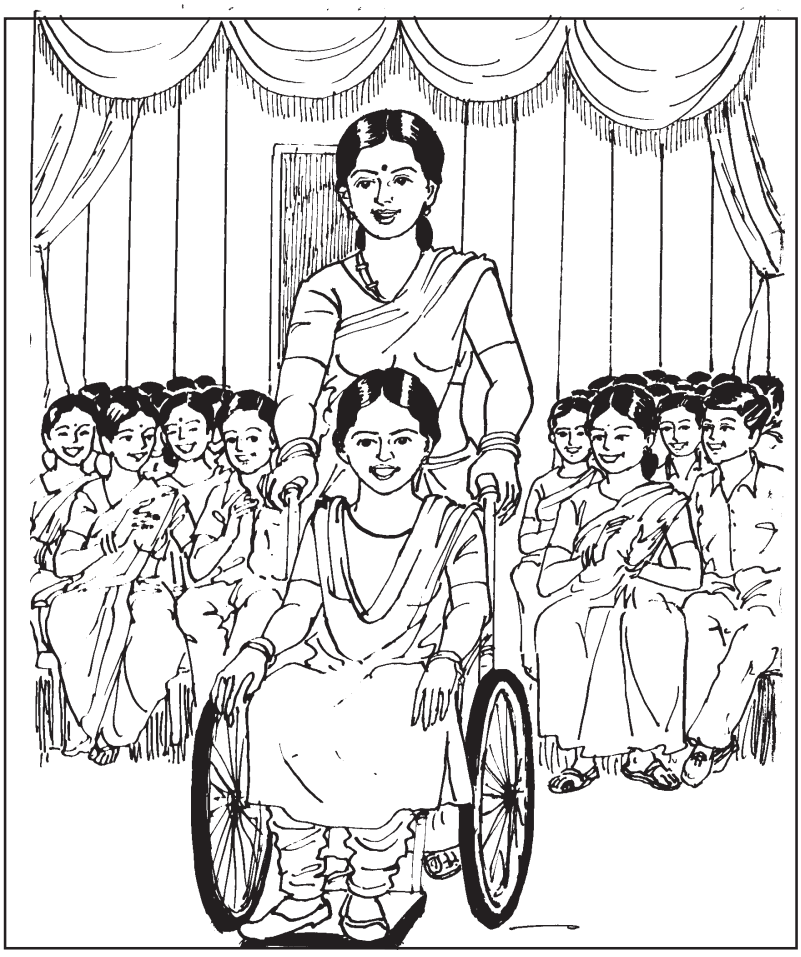

''जब इस सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गरदन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े-से-बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा ''आप व्यर्थ पैसा बरबाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवनभर गरदन ही हिला

पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।'' सहसा श्रीमती सुब्रह्मण्यम् का कण्ठ अवरुद्ध हो गया, फिर वे धीमे स्वर में मुझे बताने लगीं, ''मेरे गर्भ में तब इसका छोटा भाई आ गया था। इसके भयानक अभिशाप के बाबजूद मैंने कभी विधाता से यह नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो। इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरंतर इसके जीवन की भीख माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर-उधर देख भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों; में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।''

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थीं। बंगलौर के प्रसिद्ध माउंट कार्मेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेन्ट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा, ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की चेयर लेकर कौन पूरे क्लासरूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिंता न करें मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड-दर-पीरियड उसके पीछे खड़ी रहतीं। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एस-सी. किया। प्राणिशास्त्र में एम. एस-सी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बंगलौर के प्रख्यात इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफ़ेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता-पिता ने पेंसिलवानियाँ से चेयर मँगवा दी, जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह-बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध-क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था क्षत-विक्षत शरीर में असंख्य घाव, आभामंडित भव्य मुद्रा!

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें? मैंने जब वे कविताएँ देखी, तो आँखे भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आ पाई वह अनजाने में ही उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसके अपनी कढ़ाई-बुनाई के सुन्दर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैर का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता-पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी।

यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रखकर वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करते डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुस्कुराती खड़ी डॉ. चन्द्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जाकेट में जकड़ी, बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट ग्रहण करती डॉ. चन्द्रा।''

मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉक्टर मैरी वर्गीज़ के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया, मेरा निचला धड़ निर्जीव है, सफल शल्य-चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी। किंतु डॉ. चंद्रा के प्रोफ़ेसर के शब्दों में, 'मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने पाया।'

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ पर उनकी जननी का बड़ा-सा चित्र, जिसमें वे जे.सी. बंगलौर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही है,-'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी-बड़ी उदास आँखें जिनमें माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया-लगी कुरसी के पीछे चक्र-सी घूमती जननी, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लौंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जूड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता, यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।''

-शिवानी

लेखिका-परिचय : गौरा पन्त 'शिवानी'- हिन्दी की लोकप्रिय कथा-लेखिका हैं। आपका जन्म 1933 में राजकोट गुजरात में हुआ था। आपकी शिक्षा शान्ति निकेतन और कोलकाता विश्वविद्यालय में हुई। उन्होंने देश-विदेश का भ्रमण किया। आपको लेखन में कई पुरस्कार और सम्मान मिले हैं, इनमें 'पद्मश्री' प्रमुख है।

अभ्यास

बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

विलक्षण	----------	उत्फुल्ल	----------
अकस्मात	----------	विषाद	----------
विच्छिन्न	----------	बुद्धिदीप्त	----------
		जिजीविषा	----------

कंठगत	----------	पटुता	----------
उत्कट	----------	ख्याति	----------
नियति	----------	आघात	----------
क्षत-विक्षत	----------	व्यथा	----------
आभामण्डित	----------	नूरमंजिल	----------

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

(क) अपराजिता संस्मरण की लेखिका कौन हैं ?

(ख) डॉ. चंद्रा की माता जी का क्या नाम है ?

(ग) डॉ. चंद्रा को सामान्य ज्वर के बाद कौन-सी बीमारी हो गई थी?

(घ) 'वीर जननी' का पुरस्कार किसे मिला?

प्रश्न 3. निम्नलिखि प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

(क) लेखिका की दृष्टि में डॉ. चंद्रा सामान्य जनों से किन बातों में भिन्न थीं?

(ख) लेखिका ने जब चंद्रा को कार से उतरते देखा तो वे आश्चर्य चकित क्यों रह गईं?

प्रश्न 4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) बित्ते भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

(ख) मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य-सा भी सहारा न दे।

(ग) चिकित्सा ने जो खोया, वह विज्ञान ने पाया।

(घ) बुद्धिदीप्त आँखों में अदम्य उत्साह, प्रतिफल-प्रतिक्षण भरपूर उत्कट जिजीविषा और फिर कैसी-कैसी महत्वाकांक्षाएँ।

भाषा-अध्ययन

आजकल अंग्रेजी के शब्द हिन्दी में प्रयुक्त हो रहे हैं, जिनमें 'ऑ' ध्वनि का उच्चारण होता है इस प्रकार हिन्दी में 'ऑ' की ध्वनि का आगम अँग्रेजी से हुआ है। यह 'ऑ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है। जैसे - डॉक्टर, कॉलिज, हॉल। कुछ शब्दों में इसके प्रयोग से अन्तर आ जाता है। इसके अन्तर को समझिए-

काल	-	समय	(आ की ध्वनि)
कॉल	-	बुलाना, पुकारना	(ऑ ध्वनि)

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों का उच्चारण कीजिए-

डॉक्टर, कॉलिज, बॉल, ऑफ, ऑफिस, कॉन्वेन्ट

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों का शुद्ध उच्चारण, कीजिए और उन्हें लिखिए-

व्यक्तित्व, रिक्तता, अभिशप्त, विच्छिन्न, निष्प्राण, जिजीविषा, बुद्धिदीप्त, सुब्रह्मण्यम।

प्रश्न 3. सही विकल्प चुनिए -

(क) 'अपराजिता' शब्द में उपसर्ग है -

(1) अ (2) अप (3) अपरा

(ख) 'विकलांगता' शब्द में प्रत्यय है -

(1) गता (2) ता (3) आगता

(ग) 'अभिमान' में उपसर्ग है -

(1) अभि (2) अ (3) मान

(घ) 'अपराजिता' का विलोम है-

(1) जीता (2) जिता (3) पराजिता

पढ़िए और जानिए -

1. मोहन को कल इंदौर जाना है।
2. मुझे सूचना मिली है कि मोहन को कल इंदौर जाना है।
3. मोहन को कल इंदौर जाना है और उसके बाद उसे देवास जाना है।

उपर्युक्त वाक्यों में -

क्र. 1 में एक ही वाक्य है।

क्र. 2 में दो वाक्य हैं।

क्र. 3 में दो वाक्य हैं।

किन्तु क्र. 2 और क्र. 3 के वाक्य दो भागों में बँटे हुए हैं। ऐसे एक ही वाक्य के छोटे-छोटे वाक्य उपवाक्य कहलाते हैं। ये उपवाक्य संयोजक से जुड़े रहते हैं। इस प्रकार की वाक्य संरचना को अब समझिए।

रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार -

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं-

1. साधारण वाक्य
2. मिश्रित वाक्य
3. संयुक्त वाक्य

साधारण वाक्य

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। साधारण वाक्य में एक ही क्रिया होती है। उदाहरण- प्रांजल स्कूल जाता है।

मिश्रित या मिश्र वाक्य

जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं। सामान्यत: प्रधान वाक्य और आश्रित उपवाक्य के बीच - कि, जो, जिसने, जिसे, तब जहाँ-तहाँ जैसे संयोजक शब्द होते हैं। आश्रित उपवाक्य- तीन प्रकार के हैं- संज्ञा आश्रित, विशेषण आश्रित और क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य।

संज्ञा आश्रित उपवाक्य- प्रधान उपवाक्य किसी संज्ञा के बदले में आने वाला उपवाक्य है। यह 'कि' संयोजक शब्द से जुड़ा रहता है; जैसे- मोहन कह रहा है कि वह कल नहीं आएगा।

विशेषण आश्रित उपवाक्य - ये प्रधान उपवाक्य की संज्ञा/सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। ये उपवाक्य 'जो', 'जिसे', 'जिसने', 'जिन्हें' आदि शब्दों से जुडे रहते हैं; जैसे- तुम्हारा पैन अच्छा चलता है, जो तुमने मुझे कल दिया था।

क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य - प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता बताने वाले उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य होते हैं। ऐसे वाक्यों में जब, जैसे, वैसे, जितना आदि योजक शब्द आते हैं; जैसे- जब हम टिकिट खरीदेंगे, तब प्लेटफार्म पर जाएँगे।

संयुक्त वाक्य - संयुक्त वाक्य में एक प्रधान वाक्य और एक या अधिक उपवाक्य समानाधिकरण (समकक्ष) वाले होते हैं। संयुक्त वाक्य में दो उपवाक्य - और, या, अथवा, किन्तु, परन्तु, आदि से जुड़े होते हैं; जैसे-वह गरीब है परन्तु ईमानदार भी है।

प्रश्न 8. 'अपराजिता' पाठ से साधारण वाक्य, मिश्रित वाक्य और संयुक्त वाक्य के दो-दो उदाहरण छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए-

मैंने एक विकलांग बालक को पैर से लिखते देखा तो मैं दंग रह गया। भगवान की लीला भी विचित्र है, साहसी आत्मविश्वासी और जीवट स्वभाव के विकलांग तो हमें हतप्रभ बना देते हैं। समाज में कुछ विकलांग तो अपने हथियार डाल देते हैं तथा दूसरों के आश्रित रहकर जीवन जीते हैं। कभी वे मंदिर के सामने, कभी स्टेशन के पास या किसी सार्वजनिक स्थान पर माँगने के लिए धरना दिए बैठे रहते हैं। हमें चाहिए कि हम उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित करें। उन्हें स्वावलंबी बनाने के लिए हर सम्भव प्रयास करें और उन्हें अच्छा जीवन जीने का मार्ग सुझाएँ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

(ख) विकलांग कहाँ-कहाँ धरना दिए बैठे रहते हैं ?

(ग) हम विकलांगों के लिए क्या-क्या काम कर सकते हैं?

(घ) इस गद्यांश से मुहावरे छाँटकर उनके अर्थ और वाक्य प्रयोग कीजिए।

(ङ) इस गद्यांश में से एक-एक सरल, मिश्रित और संयुक्त वाक्य छाँटकर लिखिए।

प्रश्न 6. निम्नलिखित गद्यांश को उपयुक्त विराम चिह्न लगाकर पुनः लिखिए -

नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम मदर ने कहा हमें आपसे पूरी सहानुभूति है पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की ह्वील चेयर कौन पूरे क्लास में घुमाता फिरेगा

आप चिंता न करें मदर मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी और फिर पूरी कक्षाओं में अपंग पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती

प्रश्न 7. 'सुगम' शब्द में 'ता' प्रत्यय जोड़कर 'सुगमता' नया शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दों में निर्धारित प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए-

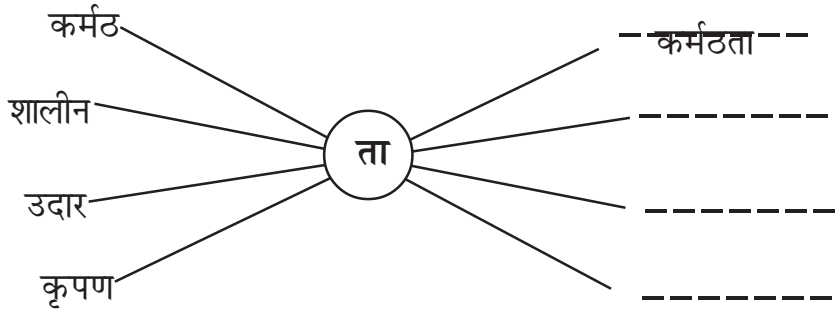

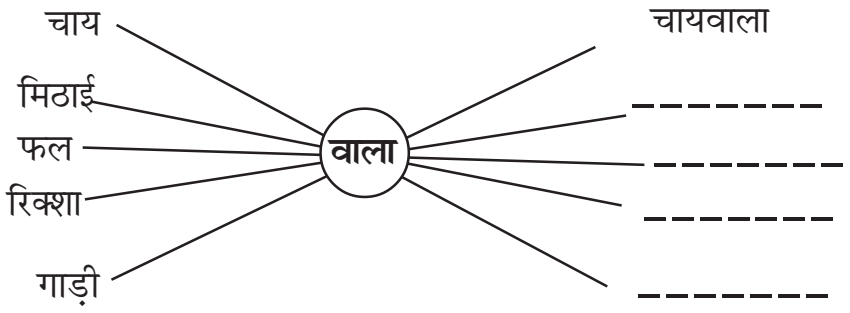

प्रश्न 8. 'प्रतिफल' शब्द में 'प्रति' उपसर्ग जुड़ा है। इसी प्रकार 'प्रति' और परा, अभि उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाकर लिखिए-

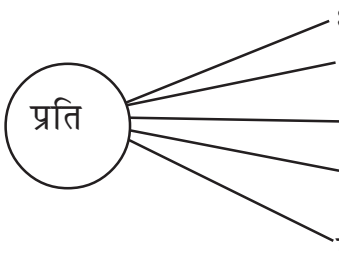

क्षण = प्रतिक्षण----------

दान = ----------

ध्वनि = ----------

रूप = ----------

वादी = ----------

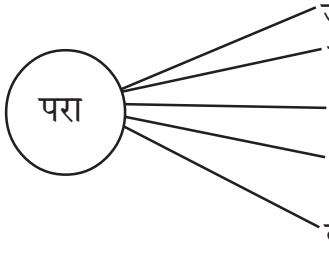

जय = पराजय

क्रम = ----------

भव = ----------

भूत = ----------

वर्तन = ----------

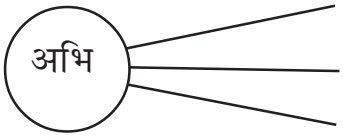

मुख = अभिमुख

शाप = ----------

नव = ----------

योग्यता विस्तार

1. लेखिका ने चन्द्रा के लिए 'अपराजिता' शब्द क्यों चुना है? आपके विचार से इसके लिए अन्य कौन-सा शब्द उपयुक्त हो सकता है?
2. कक्षा में चर्चा कीजिए कि यदि चन्द्रा की माँ में सहनशीलता और त्याग की भावना न होती तो क्या होता?
3. साहस और निर्भीकता के अनेक उदाहरण राणा साँगा के भी हैं - वे बाबर से अस्सी घाव लगने पर भी लड़ते रहे।
   'अस्सी घाव लगे थे तन में, फिर भी व्यथा नहीं थी मन में' इस संबंध में अपने शिक्षक से जानकारी लीजिए।
4. आजकल सरकार विकलांगों के हित में कौन-कौन-से कार्य कर रही है? उनकी तालिका बनाइए।
5. आपने अपने आस-पास किसी विकलांग को देखा होगा। उसे देखकर अपने मन में उठने वाले विचारों को लिखिए।
6. विकलांग दिवस कब मनाया जाता है?